मीठे-2 रूहानी बच्चों ने गीत की एक लाईन सुनी। तुम्हारे तीर्थ हैं घर बैठे ही चुपके से मुक्तिधाम पहुचना। और दुनिया के तीर्थ तो कामन है। तुम्हारे है न्यारे। जो आये ब्राह्मण बनते है, बनते तो रहते है नां। मनुष्य का बुधी योग साधु सन्तो आद-2 तरफ बहुत ही भटकता रहता है। तुम बच्चों को तो सिर्फ बाप को ही याद करने का डायरेक्शन मिलता है। वो है एक निराकार बाप। ऐसे नही निराकार को मानने वाले निराकार मठ के ठहरे। दुनिया में मतमतान्तर तो बहुत है नां। है ठीक निराकारी मत। निराकार बाप मत देते है जिससे मनुष्य ऊंच तेऊंच पद वा मुक्ति पाते है। इन बातों को जानते कुछ भी नही। सिर्फ ऐसे ही कह देते कि निराकार को मानने वाले है। अनेकानेक मतें है। सतयुग में तो होती है एक मत। कलियुग में अनेक मत अनेक धर्म है। लाखों करोड़ो मते होगी। घर-2 में हरएक की अपनी-2 मत है। यहां तुम बच्चों को एक ही बाप ऊंच ते ऊंच मत देते है ऊंच ते ऊंच बनने की। तुमको बहुत लोग कहते है यह क्या बनाया है? मुख्य बात क्या है? बोलो यह रचता बाप और यह रचना की आद मध्य अन्त की नालेज है। जिसके लिये रिशी मुनी साधु आद सब नेती-2 करते रहते है कि हम नही जानते। गोया नास्तिक है। अब तुमको बाप रचता और रचना का ज्ञान दे आस्तिक बनाते है। आस्तिक बनने से बाप का वर्सा मिलता है। नास्तिक बनने से बाप का वर्सा गंवाया है। अभी तुम बच्चों का धन्धा ही यह है नास्तिक को आस्तिक बनाना। यह परिचय
*************   ********* *******
तुमको मिला है बाप से। त्रिमूर्ती चित्र तो बहुत क्लीयर है। ब्रह्मा दवारा ब्राह्मण तो जरूर चाहिये नां। ब्राह्मणों से ही यज्ञ चलता है। यह बहुत भारी यज्ञ है। पहले-2 तो समझाना होता है कि ऊंच ते ऊंच बाप है। तो सब आत्मायें भाई-2 ठहरी। सब ही एक बाप को याद करती है। वर्सा भी रचता बाप से ही मिलता है। रचना से तो मिल नां सके। इसलिये ईश्वर को याद करते है। उनको बाप कहते है। अब बाप तो है ही स्वर्ग का रचता। और भारत में ही आते है। आकर यह कर्य करते है। त्रिमूर्ती का चित्र तो बहुत अच्छी चीज है। यह बाबा यह दादा। ब्रह्मा दवारा बाबा सुर्यवंशी घराने की स्थापना करवा रहे है। बापकहते है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो। ऐम आब्जेक्ट बिलकुल पूरी है। इसलिये बाबा मैडि्लस भी बनवा रहे है। बोलो शांट में शांट आपको दो अक्षर सुनाते है। बाप से सैकिंड में वर्सा मिलता है नां। बाप है ही स्वर्ग का रचता। यह मैडि्लस तो बहत अच्छी चीज है। परन्तु बहुत देहअभिमानी बच्चे समझते ही नही है। इस मे सारा ज्ञान है एक सैकिंड का। बाप भारत को ही आकर स्वर्ग बनाते है। नई दुनिया बाप ही स्थापन करते है। यह पुरूषोतम संगम युग भी गाया हुआ है। यह सारा ज्ञान बुधी से टपकना चाहिये। कोई का योग है तो फिर ज्ञान नही। धारणा नही होती। सर्विस करने वालों को ज्ञान की धारणा अच्छी हो सकती है। बाप आकर मनुष्यों को देवता बनाने की सेवा करें और बच्चे कोई सेवा नां करे तो वो किस काम के। वो दिल पर कैसे चढ़ सक्ते है। बाप कहते है ड्रामा में मेरा पार्ट ही है रावण राज्य से सबको छुड़ाने का। राम राज्य और रावण राज्य भारत में ही गाया हुआ है। अब राम कौन है यह भी पतित मनुष्य जानते नही है। गाते भी है पतित पावन... भक्तों का एक भगवान। फिर नाम रख दिया है राम। और फिर गालयां भी दे दी है। बाप कहते है भक्ति मार्ग में सबसे जास्ती ग्लानी करने वाला है रामायण।
*************   *******
भागवत में भी कृष्ण का हिंसक पना दिखाया है कि अकासुर, बकासुरआद को मारा। यह नाम सब अभी के है। यह है डि्टेल की बाते। पहले-2 जो कोई भी अन्दर आवे तो बाप का परिचय दो। मैडि्लस तो तुम्हारे पास है। आदमी-2 देख कर समझाना चाहिये। बेहद का बाप आते है बेहद सुख का वर्सा देने। उनको अपना शरीर तो है नही तो फिर वर्सा कैसे दे। खुद कहते है मै इस ब्रह्मा के तन से पढ़ाये राज-योग सिखाये यह पद प्राप्त कराता हूं। इस मैडि्ल में सैकिंड की समझानी है। कितना छोटा मैडि्ल है। परन्तु समझाने वालों में बहुत देहीअभिमानीपना चाहिये। वो बहुत कम है। यह मेहनत कोई से पहुंचती नही है। इसलिये बाबा कहते है चार्ट रख कर देखो। सारा दिन में हम कितना यादमें रहते है? सारा दिन आफिस

मैं काम आद करते यादमें रहना है। कर्म तो करना ही है। यहाँ नेष्टा में बिठा कर कहते है बापको याद करो। इस समय कर्म तो करते नही हो। तुमको तो कर्म करते हुये याद करना है। नही तो वो बैठने की आदत पड़ जाती है। कर्म करते याद में रहेंगे तब तो कर्मयोगी सिद्ध होंगे। पटि तो जरूर बजाना है। इसमें ही माया विघ्न डालती है। सच्चाई से चटि कोई लिखते नही है। कोई -2 लिखते है तो आधा घण्टा पौना घण्टा से याद में रहे। सो भी सवेरे ही बैठते होंगे। भक्ति मार्ग में भी सवेरे उठते है। राम-2 माला बैठ जपते है। ऐसे नही कि उस समय वो उसी धुन में रहते है।नही। और भी बहुत संकल्प आद आते है। तीखे भक्तों की कुछ बुधी ठहरती है। यह तो है अजपा जाप।यह है नई बात। गीता में भी मनमनाभव अक्षर है। परन्तु कृष्ण का नाम देने से कृष्ण को ही याद कर लेते है। कौरव अक्षर से भी बिगड़ते है। इस लिये प्रदर्शनी में भी कौट आफ अर्मिस वाला चित्र रखते नही है।बच्चे डरते है। यह तो समझाने की बहुत अच्छी बात है। भगवानोवाच्य है नां। उनकी है विनाश काले विप्रीत बुधी,यह तो गीता के अक्षर है। हमने थोड़ेई बनाया है। वैबिल भी याद में जरूर है। बोलो बाप ब्रह्मा तन से बैठ समझाते है। हम उस बाप से प्रीत रखते है। मनुष्यों को तो नां आत्मा का नां परमात्मा का ज्ञान है। सिवाय बाप के यह ज्ञान कोइ दे नही सक्ते।हम उनकी महिमा गाते है। हम कोई मनुष्य की महिमा नही करते है। ऊंच तें ऊच है वो बाप। यहत्रिमूर्ती का चित्र ही सबसे मुख्य है। बाप और वर्सा। इस चक्र को समझना तो बहुत आसान है। प्रदर्शनी से भी प्रजा तो लाखो बनती है नां।राजायें थोड़े होते है। उनकी प्रजा तो करोड़ों के अन्दाज में है। तो प्रजा ढ़ेर बनती है। बाकी राजा बनने लिये पुरुषार्थ करना है। जो जास्ती सर्विस करते है तो जरूर ऊच पद पावेंगे। जैसे रमेश(वाम्बेवाला) है,सर्विस का बहुत शौक है।कहते है बाबाः-नौकरी छोड़ दूं?रवाने लिये तो है ही। बाबा का बन गये तो शिव बाबा की ही परवरिश लेंगे।बाबा कहते है अभी नही। क्यों कि अभी तुम वानप्रस्थी तो हो नही। वानप्रस्थी को बाबा झट कह देते है। बाप कहते है मैंने भी वानप्रस्थी में प्रवेश कियाहै। वानप्रस्थी,कन्यायें, बूढ़ीमातायें है तो वो निकल सक्ती है। अगर मातायें भी जवान है तो घर में रहते सर्विस करनी है।बाबा हर एक के सरकमस्टांसिज देख कर राय देते है। शादी आद लिये अगर अलाउ नां करे तो हंगामा हो जावे हर तरफ। इसलिये हर एक का हिसाब किताब देख राय दी जाती है। कुमार है तो कहेंगे सर्विस कर सक्ते हो। बेहद के बाप से वर्सा लो। इस बाप से क्या मिलेगा दो रोटी वो सब तो मिट्टीमें मिल जाना है। दिन प्रति दिन समय कम होता जाता है। समझाते है हमारे मिलक्यत के बच्चे बरस करेंगे। परन्तु बाप कहते है कुछ भी मिलने का नही है। मिलक्यत खाक में मिल जावेगी। वो तो समझते है पिछाड़ी वाले खावेंगे। धनवान के धन को खतम होने में देर थोड़ेई लगती है। मौत तो सामने खड़ा ही है। कोई भी वर्सा ले नां सकेंगे। है ही 9, 10 वर्ष तो वर्सा कैसे पावेंगे।बहुत कम है जो पूरीरीती समझा सक्ते है। तो जरूर जास्ती सर्विस करने वाले ही ऊच पद को पावेंगे। तो उनका रिगार्ड भी रखना चाहिये। इन से सीखना है।21जन्मों लिये रिगार्ड रखना पड़े आटोमैटिक्ली। जरूर वो ऊच पद पावेंगे तो रिगार्ड तो जैसा तैसा रखना ही है।खुद भी समझ सक्ते है हमको क्या पद मिलेगा। फिर भी कोई अफसोस थोड़ेई नां होता है कि हम नापास हो जावेंगे। यहाँ तो कोई नापास हो जाते है तो जाकर कुएं मेंकूदते है।यहाँ तो समझते है जो मिला सो भी अच्छा। इसमें ही खुश होतेहै। यह है बेहद की पढ़ाई। यह राजधानी स्थापन हो रही है नां। इस पढ़ाई से तुम प्रिन्स प्रिन्सेज बनते हो। वो प्रिन्स प्रिन्सेज कालेज में पढ़ते है। जो फर बहुत धन दान करते है वो फिर राजाओं पास वा शाहुकार पास जाकर जन्म लेते है। परन्तु वो है अल्प काल का सुख। तो इस पढ़ाई पर बहुत अटेंशन देना चाहिये।सर्विस का ओना रहना चाहिये। बहुतों का कल्याण हो जावेगा। बाबा जानते है ऐसी सर्विस का शौक कोई को है नही।लक्षण भी अच्छे चाहिये नां। ऐसे नही कि डिससर्विस कर यज्ञ का भी नाम बदनाम और अपना भी नुकसान करें।

बाबा तो इस बात के लिये समझाते रहते है। मेडिलस के लिये कितना लिखते रहते है। फिर समझा जाता है ड्रामा अनुसार देरी पड़जाती है। यह ल न . (ट्रान्सलाईट)तो फर्स्ट क्लास है। बाबा ने कहा 30×40 बना दो। परन्तु बनावे कौन। जो वाकुफ हो वो बनावे तो बहुतों का कल्याण हो जावे। परन्तु माया कि ग्रहचारी भी तो होती है ना। आज ब्रहस्पत की दशा है तो कल राहू की दशा बैठ जाती है। ड्रामा में साक्षी हो पार्ट देखना होता है। ऊंच पद पाने वाले बहुत कम होते है। इन चित्रों का म्यूजियम बना देंगे तो बहुत आते रहेंगे। यह चित्र(ट्रान्सलाईट) बनने चाहिये। ना बनते है तो फिर भावी कहा जाता है। हो सकता है ग्रहचारी उतर जावे। ग्रहचारी उतरती है तो फिर जम्प कर लेते है। पुरूषार्थ कर अपनी जीवन बनानी चाहिये नही तो कल्प कल्पान्तर लिये ही सत्यानाश हो जावेगी। समझेंगे कि कल्प पहले मिसल ही ग्रहचारी आई है। श्रीमत पर नही चलेंगे तो पद भी नही मिलेगा। ऊंच ते ऊंच भगवान की श्रीमत है। इन ल न . के चित्र को तुम्हारे सिवाय कोई समझ ही ना सके। रैप्स मुआफिक खड़े होकर सिर्फ कहेंगे यह चित्र तो बहुत अच्छा बनाया है। तुमको तो बस चित्र देखने से सारा मूल वतन, सुक्ष्म वतन, स्थूल वतन सारी सृष्टी का चक्र वुधी में आ जाता है। तुम नालेज फुल बनते हो नम्बरवार पुरूषार्थ अनुसार। बाबा को तो चित्र देख कर बहुत खुशी होती है। स्टूडेन्टस को तो खुशी होनी चाहिये ना। हम पढ़ कर यह बनते है। पढ़ाई कर ही ऊंच पद मिलेगा ऐसे नहीं किस्मत जो भाग्य में होगा। पुरूषार्थ से ही प्रालब्ध मिलती है। पुरूषार्थ कराने वाला बाप मिला है उनकी भी मत पर नही चलेंगे तो बुरी गती होगी। पहले-2 तो कोई को भी इस मेडिलस पर ही समझाओ। फिर जो लायक होंगे वो झट कहेंगे हमको यह मिल सकते है? हां क्यों नही। इस चीज का जो होगा उसको तीर लग जावेगा। खुद भल जहन्नम में क्या जावे मगर दूसरो का कल्याण होगा। बाप तो वैकुंठ में तिरी पर बहिश्त देते है। इसमें तो बहुत खुशी रहनी चाहिये। सबसे जास्ती तीखा की तीर है यह(मेडिलस) बहुत सिम्पल है। इसमें खर्चा भी कोई नही है। बाप खुद कहते है मेरे भक्तों को दो। शिव के भक्तों के पास अन्दर घुस जाना चाहिये। हाथ में यह मेडिल हो। बोलो शिव बाबा कहते है मुझे याद करो तो राजाओं का राजा बन जावेंगे। बस सारा दिन ही यह सर्विस करो। बनारस में तो शिव के मन्दिर में बहुत सर्विस हो सकती है। कोई ना कोई निकलेंगे। बहुत आसान सर्विस है। कोई करके देखो। खाना तो मिलेगा ही। सर्विस करके देखो। सेन्टर तो वहाँ है ही। सवेरे जाओ मन्दिर में रात को लौट आओ। सेन्टर बना दो। सबसे जास्ती तुम शिव के मन्दिर में सर्विस कर सकते हो। ऊंच ते ऊंच है ही शिव का मन्दिर। बम्बे में भी बबुल नाथ का मन्दिर है। सारा दिन वहां जाकर सर्विस करो। इसके लिये बाबा लाख तो मेडिलस क्या कहते है 10 लाख बनाओ। बुजुर्ग लोग तो बहुतों की सर्विस कर बहुतों का कल्याण कर सकते है। यह मेडिलस ही बस है। ट्रायल करके देखो। ढेर प्रजा बन जावेगी। बड़ों को भी यह मेडिलस दे सकते है। सन्यासियों को भी बोलो तुम तो मुफ्त धक्के खाते रहते हो। बाप सिर्फ कहते है मुझे याद करो। बस। मनमनाभव अक्षर भूल गये हो? भगवानोवाच है ना। कृष्ण थोड़ेई भगवान है। वो तो पूरे 84जन्म लेते है। शिव बाबा इनको(कृष्ण)भी यह पद प्राप्त कराते है। फिर धक्के खाने की क्या दरकार है। बाप तो कहते है सिर्फ मुझे याद करो। ऐसे नही कहते है कि लौटा डालो। तुम सबसे अच्छी सर्विस शिव के मन्दिर में कर सकेंगे। परन्तु देहीअभिमानी अवस्था हो। "साफ दिल मुराद हासिल"। बनारस के लिये तो बाबा राय देते है कि वहा तो वानप्रस्थी भी बहुत है। बोलो हम ब्रह्मा के बच्चे ब्राह्मण है। बाप कहते है मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे। और कोई उपाय नही है। सवेरे से लेकर रात तक शिव के मन्दिर में बैठ कर सर्विस करो। शिव बाबा खुद कहते है हमारे मन्दिर तो बहुत है ना। तुमको कोई भी कुछ कहेंगे नही। और ही खुश होंगे कि यह तो शिव बाबा की बहुत महिमा करते है। बोलो यह ब्रह्मा भी ब्राह्मण है। यह कोई देवता नही है। यह भी शिव को याद कर यह पद पाते है। (बाकी फिर)ओम